Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

संगीत और बसंत का अंतर्संबंध: राग रागिनी के विशेष सन्दर्भ में

KOMAL[1] & DR. PRERNA ARORA[2]

[1]Research Scholar, Faculty of Music and Fine Arts, University of Delhi, Delhi
[2]Guide, Faculty of Music and Fine Arts, University of Delhi, Delhi

सार

संगीत और बसंत, दोनों ही सांस्कृतिक आधार पर एक अनोखा और सुंदर संबंध प्रकट करते हैं। बसंत ऋतु, प्राकृतिक सौंदर्य का संग्राम है जो पुनः जीवन को उत्तेजना देता है और संगीत इस उत्तेजना को शब्दों के रूप में व्यक्त करता है। राग रागिनी इस सम्बंध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बसंत ऋतु को अनुभव करने की भावना को संगीतकार राग और रागिनियों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। इनमें से कुछ राग बसंत को विशेष रूप से छूने का प्रयास करते हैं, जैसे कि राग मल्लार, हिंडोल, और बसंत। इन रागों का संबंध बसंत की ताजगी, रंग-बिरंगे फूल और हरियाली के साथ होता है, जो सुनने वालों को बसंत के आने की खबर सुनाते हैं। इस शोध पत्र में बसंत ऋतु के साथ-साथ राग बसंत की उत्पत्ति एवं इतिहास के बारे में वर्णन कर बताया गया है कि किन ग्रंथकारों ने राग बसंत का वर्णन किया है। राग–रागिनी संगीत का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं, जिसमे जो समृद्धि, प्रेम और प्राकृतिक सौंदर्य के साथ बसंत का महत्वपूर्ण परिचय कराते हैं। इस शोध-पत्र में राग-रागिनी में राग बसंत और इनकी स्त्री रागनियों के बारे में उल्लेख किया गया है। बसंत ऋतु और राग बसंत का राग-रागिनी के विशेष संदर्भ में अन्तर्सम्बन्ध दर्शाया गया हैं।

महत्वपूर्ण शब्द – बसंत ऋतु, राग-रागिनी, पुरुष राग, स्त्री राग, चार मत्त।

सृष्टि के आदि में 'ऋतु' ही सर्वप्रथम उत्पन्न हुई। विश्व में सुव्यवस्था व नियमन का कारणभूत तत्त्व ऋतु को ही माना गया है। 'ऋग्वेद में स्पष्ट कहा गया है कि सोम ऋतु के द्वारा ही उत्पन्न व वर्धित होते हैं व स्वयं ऋतु रूप ही हैं।'[1]

ऋतु पंचविधं सामोपासीत बसन्तौ हिंकारोग्रीष्मः ।

प्रस्तावो वर्षा उद्धगीथः शरत्प्रतिहारो हेमन्तोनिधनम् ॥

ऋतुओं में 5 प्रकार की साम उपासना का विधान है, जैसे बसंत ऋतु में हिंकार, ग्रीष्म ऋतु में प्रस्ताव, वर्षा ऋतु में उद्धगीत, शरद ऋतु में प्रतिहार तथा हेमंत ऋतु में निधन।[2]

बसन्त ऋतु वर्ष की एक ऋतु है। इससे ऋतुराज तथा ऋतुओं के राजा के नाम से भी सम्बोधित किया गया है। इसका आरम्भ माघ महीने की शुक्ल पंचमी से होता है। यह 3 माह तक रहता है। बसंत ऋतु वर्ष की 6 ऋतुओं मे से एक है। वर्षा, ग्रीष्म, शरद, हेमंत, शिशिर, बसंत। जिसमे बसंत ऋतु के बारे मे वर्णन किया जाये तो इस ऋतु मे प्रायः वातावरण के तापमान मे धीरे-धीरे परिवर्तन देखने को मिलते है।[3]

बसन्त ऋतु

हमारे देश में अत्यन्त प्राचीन काल से इस ऋतु में अनेक उत्सव मनाने का वर्णन मिलता है। इस ऋतु में मदनोत्सव, वसंतोत्सव, सुबसंतक, अशोकोत्तंसिका आदि विशेष प्रसिद्ध है, जिनके मनोरंजक विवरणों से प्राचीन ग्रन्थ भरे पड़े है। मदनोत्सव फाल्गुन से चैत्र मास तक मनाया जाता था, किन्तु चैत्र शुक्ल द्वादशी के पूर्णमासी पर्यंत इस उत्सव का हर्षोल्लास चरम सीमा पर पहुंच जाता था। त्रयोदशी को सर्वत्र कामदेव की पूजा होती थी अगणित युवक और युवतियां अपने-अपने नगर और ग्राम के उद्यानों में मदनोत्सव मनाते हुए नाना प्रकार की खेल-क्रीड़ाएं किया करते थे।[4] बसन्त ऋतु के उत्सवों की एक विशेषता यह है कि इनमें काव्यसंगीत और गायन-वादन का विशेष समारोह किया जाता है। इस ऋतु के आनन्ददायी प्रभाव का यह स्वाभाविक परिणाम है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

अति प्राचीनकाल से कवियों ने इस ऋतु के अगणित गीत गाये हैं। इसका वर्णन करने पर उनकी वाणी अपूर्व उत्साह और अपरिमित उमंग से भर जाती है। उत्तरवर्ती रीतिकवियों ने इसका और भी सरस वर्णन किया है।[5]

उत्तरवर्ती रीतिकवियों ने वसन्त का वर्णन करते समय उसके सौन्दर्य के अंकन में रूचि एवं सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति का अच्छा परिचय दिया है। वसन्त का आगमन ही पुष्पों के समूह को लेकर होता है कोयल की काकली, मधुप का गुन्जार, शीतल सुगन्धित पवन, आम्रमंजरी आदि जाने-पहचाने उपादानों को लेकर भी ऐसे नूतन चित्र प्रस्तुत किए गए हैं, जो की पाठक का मन मोह लेते हैं।[6] भारतीय संस्कृति मे बसन्त पंचमी के दिन को देवी सरस्वती के प्रकटोत्सव के रूप में भी मनाया जाता हैं। इस दिन सभी विद्यार्थी तथा सभी संगीत से जुडे कलाकार हो चाहे वह गायक, वादक, नर्तक कोई भी हो बसंत पंचमी के दिन माँ सररस्वती की पूजा-आराधना करके माँ से संगीत की शिक्षा का आशीर्वाद माँगते है अर्थात् ऋग्वेद में देवी सरस्वती के बारे मे बताते हुए कहा गया है –

प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वजिनीवती धीनामणित्रयवतु।

अर्थात ये मनुष्यों की परम जागरुकता हैं तथा सरस्वती के रूप में ये हमारी बुद्धि, प्रज्ञा तथा मनोवृत्तियों की संरक्षिका हैं। हमारी बुधि और हमारे व्यवहार का आधार देवी सरस्स्वती ही है। इनका वैभव अद्भुत है। इस दिन सभी विद्यार्थी तथा सभी संगीत से जुड़े कलाकार हो चाहे वह गायक, वादक, नर्तक कोई भी हो बसंत पंचमी के दिन माँ सररस्वती की पूजा- आराधना करके माँ से संगीत मे और प्रगति करने का आशीर्वाद माँगते है इसलिए भी बसंतपर्व का एक खास और महत्वपूर्ण स्थान रखा जाता है।

प्राचीन काल से ही बसंत को वर्ष का आरम्भ माना जाता है। इस समय 'सामगान' के द्वारा उसका स्वागत किया जाता था। बसंत में वृक्षों, पौधों, वनस्पतियों में उत्पन्न नवजीवन व नव अंकुर से यह कृषि प्रधान भारतीय मन प्रफुल्लित करता है। आज भी बसंत के गीतों का सहृदय प्रयोग किया जाता है।

भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है ऋतुओं में मैं बसंत हूँ। बसंत ऋतु में बसंत पंचमी, शिवरात्री तथा होली नामक पर्व मनाए जाते हैं। भारतीय संगीत साहित्य और कला में इसे महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे भारतीय संगीत मे बसंत का एक महत्वपूर्ण स्थान देखने को मिलता है अतः इसका वर्णन यदि हम राग - रागिनी के सन्दर्भ से भी देखे तो भी बसंत को मुख्य रागो मे शामिल किया गया है। प्राचीन काल से ही हमें हिन्दुस्तानी संगीत में विभिन्न ऋतुओं में अलग-अलग रागों के प्रयोग का वर्णन प्राप्त होता है। "प्रायः गायक-वादक कलाकार अपने प्रिय श्रोताओं के समक्ष ऋतु तथा समय सिद्धांत के अनुसार ही गायन-वादन करते हैं भारतीय ऋतुओं ने यहाँ के साहित्य, संगीत और कलाओं को प्रभावित किया है भारत के बंग, गुर्जर तथा राजस्थान प्रदेशों के दसवीं से बारहवीं शताब्दी के अनेक ऋतु गीत आज भी प्राप्त होते हैं। यूँ तो सभी ऋतुओं का संगीत में स्थान है, किन्तु बसंत ऋतु संगीत की क्रियात्मक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में रागों के गायन-वादन के संबंध में समय सिद्धान्त प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। इसी प्रकार ऋतुओं के संदर्भ में भी संगीत का प्रमाण प्राचीन काल से प्राप्त होता है।[7]

राग-रागिनी के रागों की उत्पत्ति

संगीतमकरंद में पुरुषराग, स्त्रीराग एवं नपुंसक राग आदि का विभाजन मिलता है तथा इनका सम्बन्ध - रौद्र, वीर, अद्भुत, शृंगार, हास्य, करुण, भयानक, वीभत्स और शान्त रसों से जोड़ा गया है। परम्परागत उपदेशानुसार इसमें छः राग एवं छत्तीस रागिनियों बताई गई हैं। छः रागों के नाम मालव, मल्लार, श्री, बसंत, हिंडोल तथा कर्णाट हैं। प्रत्येक राग की छः रागिनियों बताई गई हैं। राग एवं रागिनियों के ध्यानों पर विचार करने से ये नायक-नायिका के रूप लगते हैं। 'संगीतदर्पण' राग-रागिनी वर्गीकरण का प्रसिद्ध ग्रन्थ स्वीकार किया जाता है। इसमें शिव तथा शक्ति के संयोग से रागों की उत्पत्ति बताई गई है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

1. अधोवस्त्र मुख से - श्री

2. वामदेव मुख से - बसंत

3. अघोर मुख से - भैरव

4. तत्पुरुष मुख से - पंचम

5. ईशान मुख से - मेघराग की उत्पत्ति वर्णित है।

लास्यनृत्य के प्रसंग में पार्वती के मुख से नट्टनारायण राग अवतरित हुआ।

संगीत मकरंद

राग - बसंत

स्त्री राग - (1) नीलाम्बरी (2) धनाश्री (3) रामक्री (4) पटमंजरी (5) गौड़की

पुत्र राग - (1) साम (2) सोम (3) रीतिगौल (4) शंकराभरण

पुत्रवधू राग - (1) कल्याणी (2) दुःखवैराटी (3) सावेरी (4) तरंगिणी[8]

संगीतोपनिषदसारोद्धार

संगीतोपनिषदसारोद्धार मे बसंत राग को पुरुष राग कहा गया है निम्नलिखित रागिनियों को उनकी स्त्री अथवा पत्नी के रुप में संबोधित किया गया है। इसमे रागिनी के स्थान पर 'भाषा' शब्द का प्रयोग किया है इसमें भी 6 मुख्य राग बताए हैः- बसंत, पंचम, भैरव, मेघ, श्री तथा नटनारायण। प्रत्येक की 6 भाषाए (रागिनी) बताई गई है।

राग - बसंत

भाषा - (1)आन्दोला (2) कैशिकी (3) प्रथम मंजरी (4) गुण्डगिरी (5) देवशाखा (6) रामग्री[9]

संगीत दर्पण

संगीत दर्पण में भी 6 पुरुष राग और 5 रागिनी मानी है जिनके नामः- भैरव, बसंत, मेघ, मालवकैशिक, श्री, नटनारायण

राग - बसंत

रागिनियाँ - (1) आन्दोलित (2) देशाख्य (3) लोला (4) प्रथममंजरी (5) मंदारी[10]

पंडित दामोदर ने संगीत दर्पण मे 3 मतों को बताया है - शिव मत, हनुमत मत, रागार्णव मत।

मध्यकाल में मुगल काल में भी अबुल फसल की 'आईने अकबरी' में भी 6 राग तथा 36 रागिनीयो का वर्णन किया है - श्री, बसंत, भैरव, पंचम, मेघ तथा नटनारायण।

आईने अकबरी

अबुल फज़ल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'आईने अकबरी' मे 6 मुख्य राग मे बसंत को शामिल किया है .

राग - बसंत

रागिनियाँ - (1) देशी (2) देवगिरी (3) वैराटी (4) तोड़ी (5) ललिता (6) हिन्डोली[11]

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

राग-रागिनी के चार मत

राग-रागिनी पद्धति को मानने वालों के मुख्यरूप से चार मत है

1. शिव मत, 2. कल्लिनाथ मत, 3. हनुमन्मत तथा 4. भरत मत।

इन चार मतों में शिव और कल्लिनाथ दोनो ही मतों के मुख्य 6 रागो में बसंत राग का वर्णन प्राप्त होता है।

	मत	राग	रागिनी
1	शिव मत	बसंत	(1) देशी (2) देवगिरि (3) वराटी (4) तोड़ी (5) पलाशी (6) हिन्डोली
2	कृष्ण मत	बसंत	(1) आन्धाली (2) गुणकली (3) पटमंजरी (4) गौडगिरी (5) धांकी (6) देवसाग[12]

3. हनुमन्मत के अनुसार छः रागों की पाँच-पाँच रागिनियाँ मानी जाती हैं। अतः कुल तीस रागिनियाँ हैं। हनुमन्मत के राग संगीत दर्पण के अनुसार इस प्रकार हैं - भैरव, कौशिक, हिंडोल, दीपक, श्री और मेघ।

4. भरत मत के अनुसार भी छः राग और उनकी पाँच-पाँच अर्थात् कुल तीस रागिनियाँ मानी जाती हैं। भरत मत के राग भैरव, कौशिक, हिडोल, दीपक, श्री और मेघ हैं। ये ही राग हनुमन्मत के भी हैं।

इस प्रकार हम यह देख सकते है की स्त्री और पुरुष उस द्वन्द्व के प्रतीक है जो इस सृष्टि के आरम्भ से विद्यमान है और इस सृष्टि का आधार भी है। गम्भीरता, विशालता, कठोरता, रौद्रता आदि भावों का प्रतीकात्मक नाम पुरुष एवं श्रृंगार, चंचलता, कोमलता, संकोच आदि भावों का प्रतीकात्मक नाम स्त्री है। अतः संगीत में भी इन्ही मनोभावों को व्यक्त करने एवं ग्रहण करने के लिये संगीत की धुनों को पुरुष प्रतीक राग एवं स्त्री प्रतीक रागिनी में वर्णित करना नितान्त सार्थक है।

राग के विषय में कहा गया है कि राग एक ध्वन्यात्मक चित्र है। स्वरों के रुप में कर्णोन्द्रिय से गोचर होने वाला रुप राग की स्वर देह है तथा उसमें निहित शक्ति जो चित्त में सूक्ष्म प्रभाव उत्पन्न करती है, वह राग की भाव देह है।[13] बसंत बहार ये राग विशेषतः बसंत ऋतु में गाए-बजाए जाते हैं। इन रागो के लिए 'बसंतती सुखप्रदः' कहा गया है। सुप्रसिद्ध विद्वान 'पंडित रातनजनकर' का कथन है - कि बसंत बहार, हिडोल सोहनी, ललित, परज आदि रागों में बसंत ऋतु की प्रशंसा गीत, स्वर एवं लय द्वारा बहुत ही सुन्दर रीति से की गयी है। इसी प्रकार बसंत ऋतु के रागों जैसे राग बसंत, बहार, हिंडोल अथवा भिन्न षड्ज इत्यादि में शीतल मंद सुगन्धित वायु, वृक्षों पर कलरव करते हुए पक्षी अथवा वातावरण में छाई हुई हरियाली आदि विषयों पर आधारित बहुत सी पद रचनाएँ सुनने को मिलती हैं जैसे 'रंग रंग फुलबन में ऋतु बसंत छाई', 'फगवा बृज देखन को चलो री' इत्यादि।[14]

बसंत ऋतु के रागों का विश्लेषण

इसी प्रकार यदि बसंत ऋतु में गाये बजाये जाने वाले रागों का विश्लेषण किया जाए तो हम यह पाते हैं कि इन रागों की मुख्य विशेषता यह है कि उत्तरांग प्रधान होने के कारण इन रागों का स्वर विस्तार प्रायः मध्य तथा तार सप्तक में किया जाता है। मुख्यतः बसंत ऋतु में गाए जाने वाले रागों की प्रकृति चंचल होती है तथा इस ऋतु से सम्बन्धित उत्तरांग प्रधान राग अपनी श्रृंगारिक बंदिशों के साथ उत्साह, उमंग, प्रणय तथा हर्षोल्लास आदि भावों की अभिव्यक्ति बड़े ही सुन्दर ढंग से करते हैं।[15]

बसंत राग का अगर वर्णन भी किया जाये तो कुछ इस प्रकार होगा। इस राग में ऋषभ धैवत कोमल और दो मध्यम तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में ऋषभ तथा पंचम वर्जित हैं।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

जाति - औडव-सम्पूर्ण ,

वादी - तार षड्ज

संवादी - पंचम

समय - मध्यरात्री के पश्चात्

राग का मुख्य अंग - सां नि म॑ ध म ग

आरोह - सा ग, म॑ ध नी सां

अवरोह -सां नी ध प म॑ ग म॑ ग, म॑ ग रे सा

विशेष - बसंत राग उत्तरांग प्रधान होने से "सां नी ध प" अथवा "म॑ ग म॑ ग" इन स्वरों से पहचाना जाता है। बसंत राग का शुद्ध स्वरूप दिखाने के लिये शुद्ध मध्यम की आवश्यकता नहीं दिख पडती। केवल सुंदरता के लिये शुद्ध मध्यम लगाना हो तो "सा म ग", इसके अतिरिक्त शुद्ध मध्यम का प्रयोग नहीं होता। इस राग से मिलते जुलते अन्य भी कई राग हैं। जैसे - सोहनी, परज, ललित इत्यादी। विशेष ज्ञान के लिये निम्न लिखित आलापों को ध्यानपूर्वक देखना चाहिये। यह राग मन्द्र सप्तक में गाने से पूरिया राग का आभास होता है।[16]

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से यह कह सकते हैं कि सभी ऋतुओं के त्योहारों का अपना अलग ही उत्साह होता है। जिसका जनमानस भरपूर आनन्द लेते हैं। ईश्वर प्रदत्त ऋतुएं सभी के लिए उमंग से भरी होती है। मानव जाति प्रत्येक त्योहार पर अपनी प्रचलित परम्परा के अनुसार सभी लोगों के साथ अपनी खुशियों को बांटते है। ये त्योहार हमारे लिए प्रेम, भाईचारा और एकता का प्रतीक है और हम यह कह सकते है कि ऋतु परिवर्तन के साथ प्रकृति सदैव एक नया ही रूप धारण करती है, जिसका वर्णन संगीत में बसंत का संबंध राग-रागिनीयों के अंतर्गत भिन्न-भिन्न रूपों में हमें देखने को मिला है।

प्राचीन समय में देखे तो हमें बसंत राग की एक पूर्ण परिवार के रूप में झलक देखने को मिली है जो संभवतः हमारे शास्त्रीय संगीत में भिन्न रूपों की रागिनियों को प्रकट करता है। बसंत ऋतु में चारों ओर छायी पीले रंग की उमंग, पौधों पर नवीन पल्लव ऐसा प्रतीत होता है जैसे धरा ने अपने जीर्ण-शीर्ण वस्त्रों का परित्याग कर नवीन पीला और हरा परिधान धारण किया हो। बसंत राग की अलग-अलग रागिनियों में भिन्नता वाले रूपों का वर्णन किया गया है। इस रसमयी ऋतु ने कलाकार के हृदय को अत्यधिक रस विभोर किया है। राग-रागिनियों एवं बसंत दोनों ही कलाओं की भावव्यंजना एक ही है किंतु उनके प्रकट करने के माध्यम भिन्न-भिन्न हैं। राग-रागिनी शब्द प्रधान है, संगीत स्वर प्रधान है तथा बसंत ऋतु रंग प्रधान है। बाह्य रूप से दोनों कलाएं अवश्य भिन्न प्रतीत होती हैं परंतु आंतरिक रूप में दोनों ही एक दूसरे की पूरक हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. ऋग्वेद, श्लोंक-10/190/1
2. छान्दोग्य उपनिषदष्, भाग 5, पृष्ठ 163
3. मिश्र, डा. निधि, उत्तरवर्ती रीतिकवियों के ऋतुवर्णन, आशा पब्लिशिंग कम्पनी, पृ.147
4. मिश्र, डा. निधि, उत्तरवर्ती रीतिकवियों के ऋतुवर्णन, आशा पब्लिशिंग कम्पनी, पृ.147
5. वही, पृ.148
6. मिश्र, डा. निधि, उत्तरवर्ती रीतिकवियों के ऋतुवर्णन, आशा पब्लिशिंग कम्पनी, पृ.151

7. Prakash, Rahul Vageshwari, March 2017
8. निगम, डॉ. सरिता, हिन्दुस्तानी संगीत में राग वर्गीकरण, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली, पृ. 89
9. भातखण्डे संगीत शास्त्र, भाग 3, पृ. 88 से उदधृत
10. वही, पृ. 89
11. निगम, डॉ. सरिता, हिन्दुस्तानी संगीत में राग वर्गीकरण, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली, पृ. 94
12. निगम, डॉ. सरिता, हिन्दुस्तानी संगीत में राग वर्गीकरण, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली, पृ. 96
13. निगम, डॉ. सरिता, हिन्दुस्तानी संगीत में राग वर्गीकरण, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली, पृ. 103
14. कुकरेजा, दीपक कुमार, रागो का समय सिद्धांत एक समीक्षात्मक अधययन, आकांक्षा पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नयी दिल्ली, 2018, पृ.134
15. वही, पृ.135
16. पटवर्धन, पद्मभूषण पं. विनायकराव, राग-विज्ञान, प्रथम भाग, महाराष्ट्र मुद्रणशाळा छापखाना, पुणे, 2001, पृ.109